vinetur

2026 में उत्पादन 13.2% बढ़ने के बाद उरुग्वे की वाइनरीज़ पर बढ़ता अधिशेष का दबाव

कमज़ोर घरेलू खपत से परिवार-चालित उत्पादकों के पास नकदी की कमी और अगली फसल से पहले अंगूर उत्पादकों के लिए नए जोखिम पैदा हुए हैं

मंगलवार, 10 नवंबर 2026



उत्पादन और बिक्री के बीच बढ़ती खाई के चलते उरुग्वे का वाइन उद्योग दबाव का सामना कर रहा है। 2026 में उत्पादन बढ़ा, लेकिन घरेलू मांग कमज़ोर रही और निर्यात को लेकर अनिश्चितता भी बढ़ गई।

28 अक्टूबर को प्रकाशित क्षेत्र के आंकड़ों के अनुसार, 2026 में देश का वाइन उत्पादन 70.39 million liters रहा, जो 2025 से 13.2% अधिक है। अंगूर की फसल करीब 93.2 million kilograms पर समाप्त हुई। मज़बूत बाज़ार में यह सुधार सकारात्मक संकेत हो सकता था। लेकिन अब कई वाइनरीज़ के पास बिना बिके भंडार जमा हैं, जबकि स्थानीय बाज़ार पहले से कम वाइन खरीद रहा है।

छोटी और मध्यम आकार की वाइनरीज़ पर दबाव खास तौर पर गंभीर है। इनमें से कई सीमित वित्तपोषण वाली परिवार-

चालित कंपनियां हैं। बिना बिका वाइन पूंजी को बांधे रखता है, जबकि कंपनियों को वेतन, बिजली, रखरखाव, कर, कर्ज़ की अदायगी और भंडारण का खर्च उठाना पड़ता है। मौसमी नकदी प्रवाह पर निर्भर उत्पादकों के लिए, न बिकने वाला भंडार जल्द ही नकदी की समस्या बन सकता है।

अप्रैल में उरुग्वे के पशुपालन, कृषि और मत्स्य मंत्रालय तथा राष्ट्रीय अंगूर उत्पादन संस्थान—जिसे INAVI के नाम से जाना जाता है—ने घरेलू खपत में गिरावट और बढ़ते भंडार को उद्योग की प्रमुख चुनौतियों के रूप में चिन्हित किया था। अधिकारियों के अनुसार, कुछ टेबल वाइन श्रेणियों में यह गिरावट विशेष रूप से स्पष्ट रही है।

मौजूदा असंतुलन पूरी तरह नया नहीं है, लेकिन हाल के आंकड़े बताते हैं कि इसे संभालना और मुश्किल हो गया है। फरवरी 2025 में संसद में दिए गए वक्तव्य के दौरान अधिकारियों ने कहा था कि 150 से अधिक वाइनरीज़ के पास ऐसा अधिशेष था जिसे बेचना कठिन था और 100 से अधिक उत्पादक परिवार प्रभावित हुए थे। ये आंकड़े उस समय के थे और नवीनतम रिपोर्ट में इन्हें अपडेट नहीं किया गया है, लेकिन वे दिखाते हैं कि समस्या लंबे समय से बढ़ रही है।

अब जोखिम बिना बिकी बोतलों तक सीमित नहीं है। वाइनरीज़ को आने वाली फसल के लिए भंडारण स्थान चाहिए। यदि भंडार ऊंचा बना रहता है, तो कुछ कंपनियां अंगूर की खरीद घटा सकती हैं, निवेश टाल सकती हैं या अगले सीज़न के लिए उत्पादन योजनाएं कम कर सकती हैं। इससे अंगूर उत्पादकों को सीधा खतरा है, खासकर उन लोगों को जिनके पास खरीदार कम हैं और मोलभाव करने की क्षमता सीमित है।

उरुग्वे का मुख्य वाइन उत्पादक क्षेत्र कैनेलोनेस इन चिंताओं के केंद्र में है। देश के अंगूर के बागों और वाइनरीज़ का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र में है, जहां पीढ़ियों से परिवार अंगूर उगाने और वाइन बनाने से जुड़े हैं। बिक्री का कमज़ोर दौर न केवल वाइनरीज़ की वित्तीय स्थिति को प्रभावित कर सकता है, बल्कि अगली फसल के लिए उत्पादकों की धन जुटाने की क्षमता को भी।

निर्यात की स्थितियों ने जोखिम की एक और परत जोड़ दी है, हालांकि वाइन की खेपों पर इसका असर कितना पड़ा, यह अब भी स्पष्ट नहीं है। उरुग्वे के निर्यातकों के संघ ने सितंबर में जारी एक सर्वेक्षण में कहा कि 2026 के शुरुआती महीनों के दौरान बंदरगाह गतिविधियों में कुल या आंशिक रूप से 40 दिनों तक बाधा आई। समूह ने निर्यात क्षेत्रों में बंदरगाह आगमन रद्द होने, देरी, खेपों के समय में बदलाव और बढ़ती लॉजिस्टिक्स लागत की जानकारी दी।

वाइनरीज़ के लिए समय पर और भरोसेमंद डिलीवरी अहम है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय खरीदार नियमित आपूर्ति और तय समय पर खेप की अपेक्षा करते हैं। लेकिन उपलब्ध जानकारी से यह पता नहीं चलता कि वाइन के कितने कंटेनर सीधे प्रभावित हुए या निर्यात की कितनी मात्रा में देरी हुई। इस आंकड़े के बिना, भंडार बढ़ने का मुख्य कारण बंदरगाहों की बाधाओं को नहीं ठहराया जा सकता। लॉजिस्टिक्स की समस्याएं कमज़ोर खपत और व्यावसायीकरण की संरचनात्मक चुनौतियों से पैदा हुए व्यापक संकट के बीच एक अतिरिक्त बाधा दिखती हैं।

घरेलू बाज़ार अब उत्पादन की स्थिर खपत की गारंटी नहीं देता। अधिकारियों और उद्योग से जुड़े लोगों ने पीढ़ियों के बीच पीने की आदतों में बदलाव, उपभोक्ताओं की बदलती पसंद और अन्य पेय पदार्थों से प्रतिस्पर्धा की ओर इशारा किया है। इस बदलाव का असर सिर्फ अंगूर के बागों तक सीमित नहीं है। व्यापक पेय क्षेत्र के लिए यह दिखाता है कि मांग में बदलाव किस तरह वाइन की आपूर्ति और बिक्री के संतुलन को तेज़ी से बदल सकता है, कार्यशील पूंजी पर दबाव डाल सकता है, अंगूर खरीदने के फैसलों को प्रभावित कर सकता है और मादक पेय कारोबार में सक्रिय कंपनियों के स्वरूप को भी बदल सकता है।

उरुग्वे को वाइन की गुणवत्ता, खासकर Tannat के लिए, अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली है और कई वाइनरीज़ ने निर्यात बाज़ारों में अपनी जगह बनाई है। लेकिन उद्योग में इन उपलब्धियों का लाभ समान रूप से नहीं बंटा है। बड़े उत्पादकों के पास आम तौर पर अधिक वित्तीय भंडार, व्यापक निर्यात नेटवर्क और कारोबार में विविधता लाने की बेहतर गुंजाइश होती है। छोटी वाइनरीज़ अक्सर पारंपरिक बाज़ारों पर निर्भर रहती हैं, जहां कीमतों को लेकर प्रतिस्पर्धा अधिक और खपत के

रुझान कम अनुकूल हैं।

यदि मौजूदा दबाव बना रहता है, तो यह असमान स्थिति उद्योग के एकीकरण का जोखिम बढ़ाती है। छोटी और मध्यम वाइनरीज़ के लिए भंडार बनाए रखना, कामकाज के लिए धन जुटाना और अधिक मूल्य वाले उत्पादों या नए बाज़ारों तक पहुंचने के लिए ज़रूरी बदलावों में निवेश करना मुश्किल हो सकता है। उत्पादकों पर दबाव के संकेत तो हैं, लेकिन कारोबार बंद होने की वास्तविक संख्या का कोई व्यापक सार्वजनिक रिकॉर्ड अब तक अपडेट नहीं हुआ है।

अधिकारियों ने कारोबार में बदलाव के कार्यक्रम, प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के उपाय और उरुग्वे की वाइन की अंतरराष्ट्रीय मौजूदगी बढ़ाने की रणनीतियां प्रस्तावित की हैं। हालांकि, उद्योग की ज़रूरतें केवल दीर्घकालीन नहीं हैं। उत्पादकों को भंडार के मौजूदा स्तर का आकलन, किन वाइन श्रेणियों में सबसे बड़ा अधिशेष है इसकी स्पष्ट जानकारी और सबसे अधिक जोखिम में पड़ी वाइनरीज़ की वित्तीय स्थिति की बेहतर तस्वीर भी चाहिए।

अल्पकालीन उपाय भी ज़रूरी हो सकते हैं। इनमें ऋण सहायता, व्यावसायिक प्रचार और ऐसे वैकल्पिक लॉजिस्टिक्स विकल्प शामिल हैं, जिनसे निर्यातक अत्यधिक अतिरिक्त लागत उठाए बिना विदेशी ऑर्डर पूरे कर सकें। मुख्य सवाल सिर्फ यह नहीं है कि उरुग्वे को कम वाइन बनानी चाहिए या नहीं। सवाल यह है कि क्या उद्योग बिक्री के माध्यमों और उत्पादों के मिश्रण में इतनी तेज़ी से बदलाव कर सकता है कि आपूर्ति का अधिशेष अंगूर उत्पादकों, वाइनरीज़ और उनसे जुड़े व्यापक कारोबारी नेटवर्क को कमज़ोर न करे।